Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

गांधी और धर्म : आज के परिपेक्ष्य में

डॉ0 अमित कुमार राय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास

शिया पी0जी0 कालेज, लखनऊ।

सारांश

गांधी की धर्म की अवधारणा विशेष रूप से भारतीय समकालीन में सामाजिक–राजनीतिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। धर्म के बारे में उनकी अवधारणा एकरूपता और समानता का परिचय देती है। गांधी सोचते हैं कि धर्म और नैतिकता के बीच घनिष्ठ संबंध है। जो धर्म मनुष्य की समस्याओं को दूर करने में विफल रहता है उसे धर्म नहीं कहा जा सकता। उनका सपना साथी दुश्मन या प्रतिद्वंद्वी के साथ शांति और सद्भाव पर रहना है। अहिंसा का उनका सिद्धांत स्वतंत्र इच्छा और शांत की उड़ान पर एक कदम है। यहां तक कि धर्म के साथ राजनीति को भी धार देता है। उसके लिए मनुष्य की आंतरिक प्रवृत्ति बुराई पर विजय प्राप्त करना है। धर्म मनुष्य को निर्देश देता है कि वह सत्य को कैसे प्राप्त करे। यह ईश्वर की प्राप्ति से संभव है। यदि वह सत्य को पाने के लिए प्रेम के मार्ग पर चल रहा है तो वह अपने रास्ते पर सही है।

प्रस्तावना

इसमें कोई संदेह नहीं है कि गांधी की धर्म की अवधारणा सामाजिकता और समानता के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। धर्म और नैतिकता के बीच अनैतिक संबंध है। जब तक वह नैतिक नहीं है, जब तक नैतिकता नहीं होगी तब तक धर्म निरर्थक है। गांधी के लिए धर्म और नैतिकता एक दूसरे के पूरक हैं और वे किसी भी तरह से विरोध नहीं करते हैं। फिर, गांधीवाद के कारण। कारण नैतिकता के साथ जुड़ा हुआ है। गांधी ने कहा, ''नैतिकता और धर्म परिवर्तनीय हैं।'' मनुष्य जिस पर विजय प्राप्त करता है वह अनैतिकता है। केवल सही मायने में धार्मिक व्यक्ति ही सत्य को प्राप्त कर सकता है गांधी की भाषा में ईश्वर है। यह आत्म–साक्षात्कार के द्वारा सत्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को संभव बनाता है। प्रेमपूर्वक, यदि कोई व्यक्ति प्रेम के सिद्धांत का पालन करता है, तो वह सत्य को प्राप्त करने के अपने तरीके से सही है, अन्यथा नहीं। सत्य को अहिंसा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। अहिंसा भीतर से मनुष्य के आंतरिक गुणों को विकसित करती है। इसके अलावा, हमें अहिंसा (प्रेम) के सिद्धांत और राजनीति सहित हमारे जीवन के हर पहलू का अभ्यास करना चाहिए।

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

गाँधी जी न केवल एक राजनेता थे बल्कि वह एक संत भी थे। महात्मा गाँधी के राजनीतिक विचार नैतिकता से ओतप्रोत थे। वह अन्य नेताओं की भाँति नास्तिक और भौतिकवादी नहीं थे बल्कि वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म की भूमिका को स्वीकार करते थे। महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन अध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। गाँधी जी सभी धर्मो के समन्वय में विश्वास करते थे। वे धर्म की कट्टरता के खिलाफ थे। वह हर धर्म की अच्छाईयों को स्वीकार करना चाहते थे। गाँधी जी न केवल भारत की एकता को बनाये रखना चाहते थे बल्कि भारत की बहुलवादी संस्कृति का समन्वय भी करना चाहते थे। इसके लिए वह सभी धर्मो का सम्मान करने की बात करते थे।

गाँधी जी धर्म को व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की समस्याओं के समाधान का एक उपकरण मानते थे। गाँधी जी का धर्म औपचारिक अथवा परम्परागत नहीं है। अपने धर्म की धारणा को स्पष्ट करते हुए वे कहते है कि धर्म वह है जो सभी धर्मो में अन्तर्निहित है तथा जो हमें अपने निर्माता के आमने सामने ला देता है।[1] वे उस धर्म को मानने के लिए तैयार नहीं थे, जो विवेक सम्मत नहीं अथवा नैतिकता के विरूद्ध हो। वे सभी धर्मो की मूलभूत एकता में विश्वास करते थे और धर्म को जीवन का अंग और उपांग मानकर उसे जीवन की प्रतिछाया मानते थे। उनके अनुसार मानव–जीवन का प्रत्येक पहलू धर्म द्वारा नियन्त्रित होना चाहिए।[2]

गाँधी एवं धर्म

गाँधी जी की मान्यता थी कि धर्म मनुष्य के जीवन की धुरी है तथा राजनीति अपनी तमाम बुराईयों के बावजूद भी मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि, "यदि मैं राजनीति में भाग लेता हूँ तो उसका एकमात्र कारण यही है कि राजनीति वर्तमान समय में हमें सर्प की कुण्डलियों की भाँति घेरे हुए है, जिसके चंगुल से अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कोई नहीं निकल सकता है। अतः मैं इस सर्प से द्वन्द्व युद्ध करना चाहता हूँ। मैं राजनीति में धर्म को लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"[3] धर्म ही गाँधी जी को राजनीति नहीं त्यागने को विवश करता है। जीवन का लक्ष्य है आत्म–साक्षात्कार करना और गाँधी जी का विश्वास था कि आत्म–साक्षात्कार के लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण मानव जाति के साथ तादातम्य स्थापित किया जाए और सबके हित में, सबके कल्याण हेतु कार्य किया जाए। राजनीति में भाग लिए बिना वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य के सभी कार्य जीवन समष्टि के अविभाज्य अंग होते हैं। आज आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक कार्य एक–दूसरे से पृथक नहीं किए जा सकते।[4] गाँधी जी का मत था कि जो मनुष्य देश–प्रेम को नहीं जानता वह अपने सच्चे कर्तव्य या धर्म को नहीं जानता है।[5] धर्म मानव–सेवा, सर्व हित, सर्व कल्याण, देश प्रेम आदि सभी का समष्टि रूप है।[6] गाँधी जी ने धर्म की सृजनात्मक शक्ति को स्वीकार किया और धर्म उनके लिए नैतिक अनुशासन की व्यवस्था

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

थी। उन्होंने कहा, "मेरे मत में धर्म का अर्थ है– नैतिकता। मैं ऐसे किसी धर्म को नहीं मानता जो नैतिकता का विरोध करता हो या नैतिकता के परे कोई उपदेश देता हो। धर्म तो वास्तव में नैतिकता को व्यवहार में घटित करने की पराकाष्ठा है।"[7] उन्होंने समाज में व्याप्त धर्म के विकृत रूप को देखा और अपने प्रयोगों एवं निष्कर्षो के आधार पर धर्म की पुर्नव्याख्या की। गाँधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और यह माना कि धर्म को निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनो निष्प्राण और शून्य हो जाते है।

गाँधी जी का धर्म, वृक्ष की तरह एक है, जिसकी विभिन्न धर्मो के रूप में अनेक शाखाएँ हैं। उन सभी धर्मो का स्रोत एक ही है, क्योंकि ईश्वर एक ही है। विभिन्न धर्म उस ईश्वर तक ले जाने के मार्ग है।[8] यद्यपि विभिन्न धर्मो में ईश्वर के अलग–अलग नाम बताए गए हैं किन्तु गाँधी जी के मत में वे उसके व्यक्तित्व की भिन्नता को नहीं अपितु गुणों की भिन्नता को दर्शाते है। विभिन्न धर्म एक ही बिन्दु पर मिलने वाले भिन्न–भिन्न पथ है। सभी धर्मो का एक ही समान नैतिक आधार है, जिसे हम विश्व–धर्म कह सकते हैं। एक बार प्रार्थना प्रवचन के अवसर पर गाँधी जी ने कहा, "मैं कहता हूँ कि मैं हिन्दू हूँ, सच्चा हिन्दू हूँ ओर सनातनी हिन्दू हूँ, इसीलिए मैं मुसलमान भी हूँ, सिख भी हूँ, पारसी भी हूँ, ईसाई भी हूँ, यहूदी भी हूँ। जितने मजहब है, मैं सबको एक ही पेड़ की शाखाएँ मानता हूँ। मैं किस शाखा को पसंद करूँ और किसको छोड़ दूँ? किसकी पत्तियाँ मैं लूँ और किसकी पत्तियाँ मैं छोड़ दूँ। सब मजहब एक हैं। ऐसा मैं बना हूँ, उसका मैं क्या करूँ? सब लोग अगर मेरी तरह समझने लगे तो हिन्दुस्तान में पूरी शान्ति हो जाये।"[9]

गाँधी जी ने स्वयं यह स्वीकार किया था कि वे एक निष्ठावान हिन्दू हैं। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि, "उनका हिन्दुत्व उन्हें अनिवार्य रूप से इस बात की प्रेरणा देता है कि वे दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति भी स्नेह और सहिष्णुता का भाव रखे" उन्होंने कहा "यदि मैं किसी मुसलमान या ईसाई को संकट में पड़ा देखूँ अथवा उसके विरूद्ध कोई अन्याय होते देखूँ और संकट से उसका निवारण न करूँ अथवा उसके अन्याय का प्रतिकार करने के लिए अपने प्राणों को भी दांव पर न लगा दूँ, तो इससे मेरे हिन्दुत्व का अपमान होगा।" गाँधी जी ने एक अन्य अवसर पर हिन्दू धर्म के प्रति अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा "मेरा हिन्दू धर्म सर्वव्यापी है। यह दूसरे धर्मो के प्रति विरोध का समर्थन नहीं करता। सभी धर्म एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कोई भी व्यक्ति प्रत्येक धर्म में अच्छे सिद्धान्त खोज सकता है। किसी भी धर्म को दूसरे धर्म से ऊँचा मानना, संतुलित धार्मिक दृष्टिकोण नहीं कहा जा सकता। वास्तव में सभी धर्म, शाश्वत सिद्धान्तों की दृष्टि से एक–दूसरे के पूरक है। अतः किसी एक धर्म के विशिष्ट लक्षण को दूसरे धर्म का निषेध नहीं माना जा सकता। सही दृष्टिकोण तो यह होगा कि विशिष्ट धर्म के

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

जो विशिष्ट लक्षण शाश्वत सिद्धान्तों के अनुकूल हों, उन्हें व्यक्ति को अपने स्वयं के धार्मिक विश्वासों के साथ ही पवित्र मानकर स्वीकार कर लेना चाहिए।"[10]

गाँधी जी की मान्यतानुसार सर्वोपरि धर्म मानव मात्र की सेवा करना है और वैष्णव के गुणों को धारण करना है। सन् 1947 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक रैली को सम्बोधित करते हुए गांधी जी ने जो विचार व्यक्त किये वे उनकी धार्मिक सहिष्णुता के परिचायक हैं। गाँधी जी ने कहा "जब कि मुझे हिन्दू होने का सचमुच गर्व है मेरा हिन्दू धर्म न तो अनुदार है, न असहिष्णु है और न न्यारा है। जैसा मैं हिन्दू धर्म को जानता हूँ। हिन्दू धर्म बाकी सब धर्मो में जो अच्छाईयाँ हैं उन्हें अपने अन्दर आत्मसात करता है। यदि हिन्दुओं का यह विश्वास है कि हिन्दुस्तान में कोई गैर हिन्दू बराबरी और इज्जत के साथ नहीं रह सकता और मुसलमानों को, अगर वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं, तो घटिया हैसियत कबूल करनी पड़ेगी और अगर मुसलमान यह समझते है कि पाकिस्तान में सिर्फ मातहत की जाति से ही हिन्दू रह सकते हैं तो इसका मतलब यह है कि हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों का खात्मा हो जाएगा।"[11] गांधी जी की यह चेतावनी आज के इस तनावपूर्ण परिवेश में सत्य होती प्रतीत हो रही है।

गाँधी जी ने कहा कि "मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि इंसान–इंसान के बीच इस तरह का भाईचारा कायम हो जिसमें हिन्दू, मुलसमान, ईसाई, पारसी और यहूदी सब एक समान शामिल हो, क्योंकि मुझे दुनिया के बड़े–बड़े मजहबों की बुनियादी सच्चाई में विश्वास है। मुझे यकीन है कि यह सब मजहब ईश्वर के लिए हुए हैं और उन लोगों के लिए जरूरी थे जिन्हें ये ईश्वर से मिले। मुझे इस बात का यकीन है कि अगर हम अलग–अलग मजहबों के मानने वालों की निगाह से पढ़े तो हमें पता चलेगा कि सब मजहबों की जड़ एक है।[12] एक ईश्वर में विश्वास हर धर्म का मूल आधार है। लेकिन मैं भविष्य में ऐसे किसी समय की कल्पना नहीं करता, जब इस धरती पर व्यवहार में केवल एक ही धर्म रहेगा। सिद्धान्त की दृष्टि से चूंकि ईश्वर एक है, इसलिए धर्म भी एक ही हो सकता है। परन्तु व्यवहार में ऐसे कोई दो मनुष्य मेरे जानने में नहीं आए, जो ईश्वर के विषय में एक सी कल्पना करते हों। इसलिए मनुष्यों के विभिन्न स्वभावों तथा विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों की जरूरतें पूरी करने के लिए धर्म भी सदा भिन्न ही रहेंगे।"[13]

गाँधी जी की हिन्दू–मुस्लिम एकता में जो हार्दिक आस्था थी वह इस्लाम के अध्ययन से अधिक दृढ़ बनी। वह लिखते है कि, "जब मैं यरवदा जेल में था तो मैं मौलाना शिबली की लिखी 'पैगम्बर की जीवनी' पढ़ी। मैंने 'उसवा–ए–सहाबा' नामक पुस्तक पढ़ी।"[14] उन्होंने लिखा, "मुझे इस बात का दावा है कि मैने धर्मो के एक सच्चे जिज्ञासु की हैसियत से पैगम्बर की जीवनी और कुरान शरीफ का अध्ययन किया है और इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि बुनियादी तौर पर कुरान अहिंसा की तालीम देता है। कुरान

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

हिंसा से अहिंसा को बेहतर मानता है। अहिंसा एक फर्ज के तौर पर इंसान पर आयद की गई है जबकि हिंसा की किसी खास वक्त की जरूरत के तौर पर ही इजाजत दी गई है। पैगम्बर साहब ने क्या किया और क्या नहीं किया इसको नहीं बल्कि दुनिया के महान् पैगम्बरों ने लोगों को जो करने का उपदेश दिया उसके मुताबिक मैं अमल करने की कोशिश करूँगा। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि मुहम्मद साहब को पैगम्बर तलवार से नहीं हासिल हुई, वह सत्य की खोज में कठोर साधनाएँ करके अपने अल्लाह से दुआएँ माँग–माँगकर प्राप्त हुई। यदि आप पैगम्बर के महान जीवन से इस साधनाओं के वर्षो को अलग कर दे तो आप पैगम्बर साहब की पैगम्बरी छीन लेंगे। मुहम्मद साहब की जिन्दगी के इन्ही साधनाओं के वर्षो ने उन्हें पैगम्बरी अता की। जब किसी पैगम्बर को लोग पैगम्बर स्वीकार कर लेते है तब पैगम्बर का समर्थवान जीवन, मामूली लोगों के लिए मिसाल नहीं बन सकता, सिर्फ पैगम्बर ही पैगम्बर के कामों को तोल सकता है।[15] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विश्व के सबसे कट्टर धर्म इस्लाम में भी उन्होंने अहिंसा के गुण को ग्रहण किया। गाँधी दर्शन की नीव ही इस तथ्य पर आधारित है कि, "ईश्वर का दिया हुआ एक धर्म अगम्य है–वाणी से परे है। अपूर्ण मानव उसे अपनी–अपनी भाषा में रखते हैं और उनके शब्दों का अर्थ दूसरे मनुष्य करते हैं, जो स्वयं उतने ही अपूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में किसके अर्थ को सही माना जाए? प्रत्येक मानव अपने दृष्टिकोण से सच्चा है, परन्तु यह असम्भव नहीं है कि प्रत्येक मानव गलत हो। इसलिए सहिष्णुता की जरूरत पैदा होती है। इस सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं है कि हम अपने धर्म की उपेक्षा करें, परन्तु यह है कि अपने धर्म के प्रति हम अधिक ज्ञानमय, अधिक सात्विक और अधिक निर्मल प्रेम रखें।"[16]धार्मिक सहिष्णुता की यही भावना आगे चलकर गांधी जी के दर्शन में इतनी वृहदाकार हो गई कि उसने विश्व के समस्त धर्मो को अपने अन्तस में समेट लिया और यह भावना अपने पूर्णाकार रूप में प्रस्फुटित हुई कि जिस प्रकार किसी वृक्ष का तना एक होता है, परन्तु शाखाएँ और पत्ते अनेक होते है, उसी प्रकार सच्चा और पूर्ण धर्म तो एक ही है, परन्तु जब वह मानव के माध्यम से व्यक्त होता है, तब अनेक रूप ग्रहण कर लेता है।[17]

उपसंहार

आज के भारत में गाँधी जी की धर्म के प्रति दिये गये विचार प्रासंगिक है। जब पूरे देश में ही नहीं विश्व में धर्म के नाम पर नफरत फैलायी जा रही है, दंगे हो रहे है, लोग धर्म के नाम पर एक–दूसरे के खून के प्यासे है तब गांधी जी का सब धर्मो का समन्वय आवश्यक हो जाता है। गाँधी के विचार आज के भारत की एकता को बनाये रखने के लिए लोगों के बीच प्रेम की भावना को बढ़ाने के लिए कल से ज्यादा आवश्यक है। आज राजनीति में धर्म का प्रयोग नैतिकता के लिए नहीं बल्कि लोगो को बांटकर वोट लेने के लिए किया जा रहा है। राजनीति में नैतिकता का पतन होता जा रहा है। कुर्सी पाने के

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

लिए नेता नफरत के बीज बो रहे है, ऐसे समय में न केवल राजनीति में बल्कि समाज को भी सही दिशा दिखाने के लिए गांधी जी के विचार आवश्यक है। धर्म से उनका तात्पर्य उस धर्म से है जो सभी धर्मों को रेखांकित करता है, जो हमें हमारे निर्माता के साथ आमने–सामने लाता है, जो एक असत्य को सत्य के भीतर बांधता है। लेकिन यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि हम 21 वीं दुनिया के लोग धर्म को खाने–पीने और औपचारिक संस्कारों और संस्कारों, मर्यादाओं और मर्यादाओं से परे समझते हैं। इसलिए इसे बदनाम किया गया है। गांधी के अनुसार, धर्म आज पहले की तुलना में अधिक प्रासंगिक है। मानव जाति के हाथों में जबरदस्त शक्ति है, लेकिन जब तक वह धर्म के साथ हाथ नहीं मिलाता, वह मानव सभ्यता को मिटा देगा। विज्ञान और आध्यात्मिकता को पूरा करना होगा। पदार्थ का मात्र विज्ञान हमें वास्तविक ज्ञान या वास्तविक खुशी नहीं दे सकता है। यह कहने का अर्थ यह है कि गांधी मनुष्य में भावना के साथ सबसे बड़े प्रयोगकर्ता थे। हमारे जीवन में एक आंतरिक रिक्तता है और केवल धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों में विश्वास ही हमें हर तरह की तबाही से बचा सकता है। यह वह जगह है जहां 21 वीं सदी में गांधी की धर्म की अवधारणा की प्रासंगिकता है। धर्म की अवधारणा से विज्ञान की जांच और तर्क एक तरफ खड़े होने में सक्षम है और दूसरी ओर मनुष्य में आत्मा के नए आयाम के लिए हमें प्रदान करता है। उन्होंने विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन दोनों को चुनौती देते हुए धर्म को पर्याप्त क्रांतिकारी बना दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. एम0के0 गांधी, 'माई रिलीजन', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, सन् 1955, पृष्ठ 3
2. 'हिन्द स्वराज', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, सन् 1958 पृ0 47–53
3. एम0के0 गाँधी माई रिलीजन, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद, सन् 1955, पृष्ठ 123–158
4. रोम्याँ रौला,'महात्मा गांधी', पृष्ठ 98
5. हरिजन, 24 दिसम्बर 1938, पृष्ठ 393
6. यंग इण्डिया, भाग 2 तथा 3, पृष्ठ 296 तथा 184
7. प्रो0 बी0एम0 शर्मा, 'गांधी दर्शन के विविध आयाम', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2017, पृ0 172–173
8. उपरोक्त, पृष्ठ 174
9. उपरोक्त, पृष्ठ 174
10. हरिजन बन्धु, 19 मार्च 1933
11. प्यारेलाल, महात्मा गाँधीः दि लास्ट फेज, भाग–1, पृ0 440–441

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.28
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

12. ळरिजन, 16 फरवरी 1934
13. प्रो0 बी0एम0 शर्मा, 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम,' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2017, पृष्ठ 182–183
14. उपरोक्त, पृ0 183
15. उपरोक्त, पृ0 184
16. गांधी जी, 'फ्राम यरवदा मन्दिर', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1935, प्रकरण –10
17. उपरोक्त

Received: 20.09.2021 **Accepted:** 26.10.2021 **Published**: 26.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.